वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष - २५ जुलाई - २०२५ प्रकाशन - ७

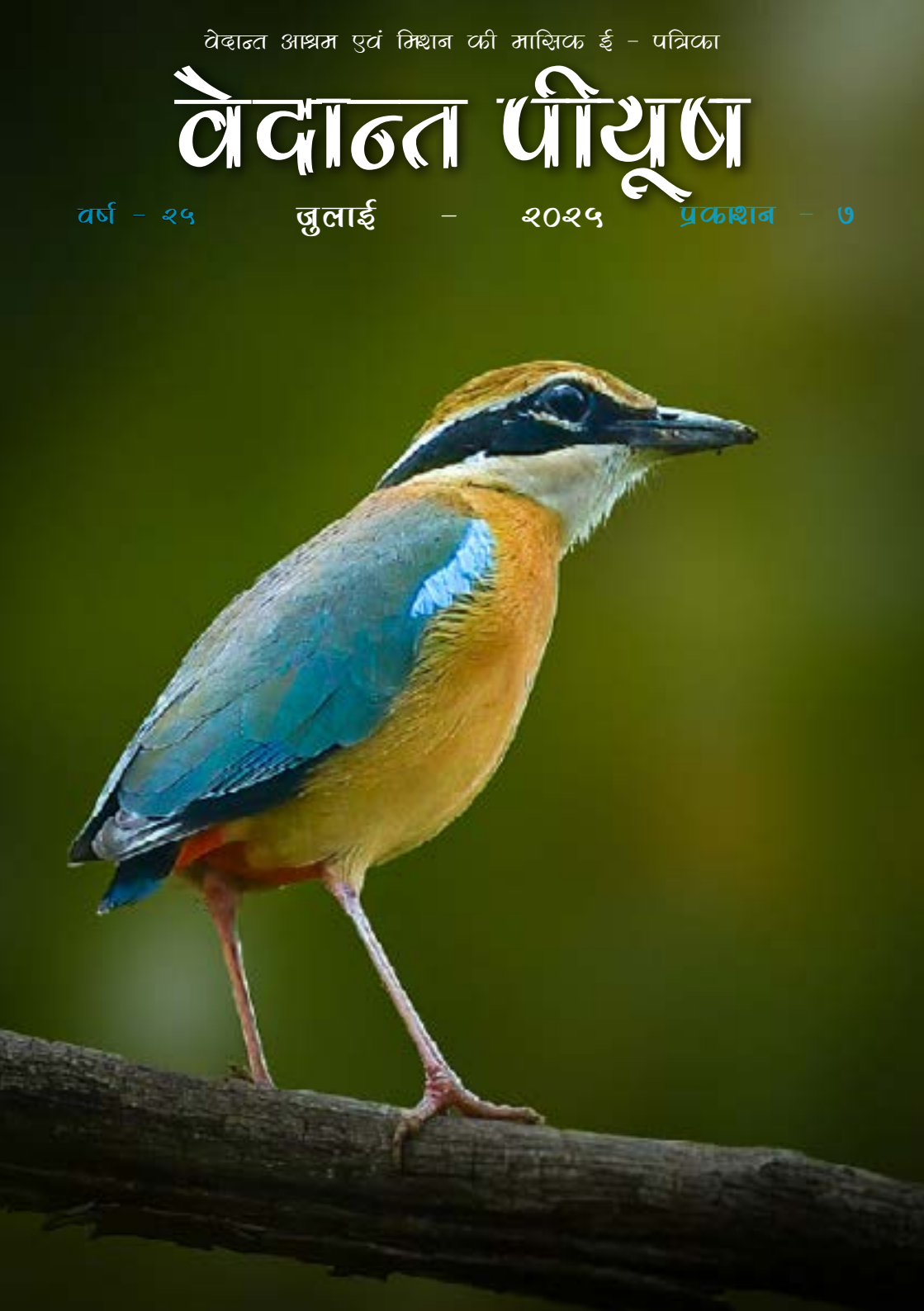

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

जुलाई २०२५

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

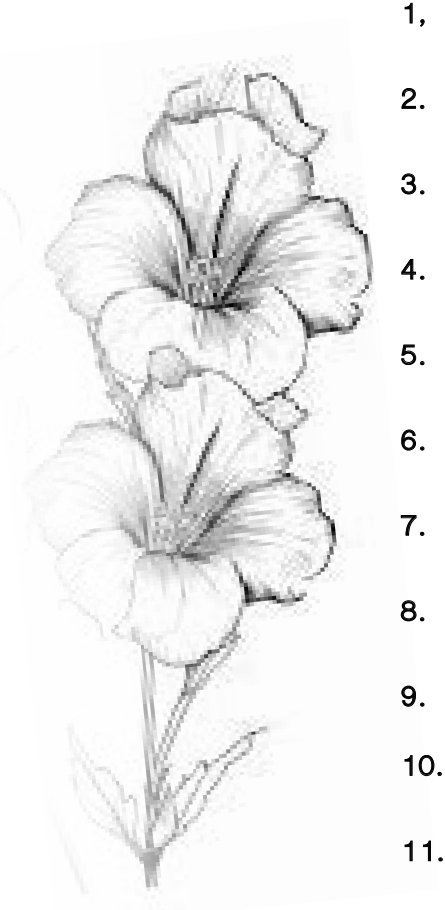

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	वाक्यवृत्ति	11
5.	गीता और मानवजीवन	16
6.	जीवन्मुक्त	20
7.	श्री कौशल्या चरित्र	23
8.	कथा	27
9.	आश्रम-मिशन समाचार	31
10.	आगामी कार्यक्रम	44
11.	इण्टरनेट समाचार	45
12.	लिन्क	46

जुलाई 2025

आत्मबोध

श्लोक : ४८

आत्मैवेदं जगत्सर्वम्
आत्मनोऽन्यन्न विद्यते।
मृदो यद्वद्घटादीनि
स्वात्मानं सर्वमीक्षते।।

जिस प्रकार से मिट्टी के बने हुए घट आदि मिट्टी ही है, उसी प्रकार से ज्ञानवान् देखता है कि यह समस्त जगत् हमारी आत्मा ही है, हम से भिन्न कुछ भी नहीं है।

सन्देश

पूज्य गुरुजी
स्वामी आत्मानन्दजी

मन एक क्षेत्र

'जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे' यह शाश्वत सत्य भगवद् गीता के १३वें अध्याय में बताया गया है। जहां भगवान् बताते हैं कि, 'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते' अर्थात् 'यह शरीर क्षेत्र, एक खेत कहलाता है।' जब कि कई परम्पराएं, जिनमें अपने देश की कुछ धाराएं भी शामिल है, यह मानती है कि हमारा भाग्य बाहरी शक्तियों या ईश्वरीय इच्छा से निर्धारित होता है, वहीं वैदिक ऋषियों ने साहसपूर्वक यह घोषणा की कि जीवन एक भीतर से बाहर की यात्रा है। यह क्रान्तिकारी अन्तर्दृष्टि – कि हम ही अपने जीवन की कहानी के लेखक हैं – यह सनातन धर्म की आधारशिला बन गई।

विभिन्न दृष्टिकोण

क्यों कुछ लोग जीवन के हर पहलू में सौन्दर्य और दिव्यता को देखते हैं, जब कि अन्य इसे अच्छाई और बुराई का युद्धक्षेत्र

मानते हैं? क्यों कुछ लोग महान मानवीय उपलब्धियों का श्रेय रहस्यमय एलियनों को दे देते हैं, मानो मानव के भीतर कोई सामर्थ ही न हो? ईशावास्य उपनिषद् स्पष्टरूप से कहता है कि पूरा ब्रह्माण्ड दिव्यता से व्याप्त है, और महावाक्य 'तत्-त्वम् असि' इससे भी आगे जाकर कहता है, 'तुम वह ही हो।' हम कोई छोटे, अलग, संकुचित प्राणी नहीं है, किन्तु असीम ब्रह्म की ही अभिव्यक्तिरूपा है।

क्या सीमित मन एक बाधा है?

हां, हम सीमित व्यक्तियों के रूप में प्रकट होते है, किन्तु यह सीमा कोई कमजोरी नहीं है, यही वह साधन है, जिसके माध्यम से हम अपनी सीमाओं से परे जा सकते हैं। सही, प्रामाणिक समझ और शिक्षा हमें हमारी छिपी क्षमताओं को पहचानने और अनन्त से जुड़ने में सहायक बन सकती है। किन्तु यह यात्रा कैसे हो? इसका उत्तर है – मन को समझकर।

संस्कार – बीज की तरह

मन, चेतना का प्रकट रूप है – एक मशाल की तरह जो दृष्टि, विचार और कल्पना के स्थान को प्रकाशित करता है। हम इसके द्वारा दुनिया और स्वयं को समझते हैं। हम निर्णय लेते हैं, पसंद-नापसंद बनाते हैं, भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करते हैं –

यह सब मन के द्वारा होता है। ये मानसिक प्रभाव हमारे द्वारा बोए गए बीज की तरह होते हैं। ये बीज इच्छाओं में विकसित होते हैं, इच्छाएं कर्मो को जन्म देती हैं, और वही कर्म हमारे अनुभवों का कारण बनते हैं। इसलिए, हमारे सुख-दुःख भाग्य का परिणाम नहीं, बल्कि हमारे ही कर्मों की फसल हैं। सच तो यह है कि हम ही अपने अन्तर्मन के स्वामी हैं।

पसंद-नापसंद के परिणाम

शुरुआत में, यह पसंद और नापसंद का चक्र स्वाभाविक और हानिरहित, निर्दोष प्रतीत होता है। किन्तु आगे चलकर इसकी हमें बहुत बड़ी किमत चुकानी पड़ती है। ये राग और द्वेष हमारी दृष्टि को सीमित कर देते हैं और भय, चिन्ता और अन्तर्विरोध को जन्म देते हैं। विडम्बना यह है कि हम अपनी बुद्धि से एक सीमित दुनिया बना लेते हैं और फिर उसीमें दुःखी रहते हैं।

निश्चय और बुद्धि

और भी हानि तब होती है कि जब हम किसी बात को अन्तिम सत्य मानकर उसकी जांच करना बन्ध कर देते हैं। जैसे ही हम किसी चीज को 'अच्छा' या 'बुरा' ठहराते हैं, हमारी जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और इसके साथ ही हमारा खुलापन, विनम्रता भी समाप्त हो जाते है। ज्ञान का उद्देश्य शाश्वत सत्य की खोज होना चाहिए, किन्तु हम अस्थायी सुख और अधूरे तथ्यों पर ही सन्तुष्ट हो

जाते हैं। हमारे सीमित लक्ष्य और जल्दबाजी में अविचारपूर्वक किया निश्चय हमारी बुद्धि के विकास को अवरुद्ध कर देता हैं।

हम ही स्वयं भाग्य के निर्माता

समय के साथ, इसका परिणाम चिन्तनशील, जिज्ञासु मन के बजाय एक संकीर्ण, प्रतिक्रियात्मक मन बना देता है – जो सिर्फ इच्छाओं के पीछे भागता है, चूंकि सभी नाशवान है, इसलिए हम निरन्तर संघर्षरत रहते है, एवं सदैव असन्तुष्ट रहते है। यह किसी दैवी आदेश के कारण नहीं, किन्तु हमारे स्वयं के भ्रमित निश्चय और इच्छाओं की तीव्रता का परिणाम है।

निषेध द्वारा बोध–

अन्ततः मन एक उपकरण है। हम इससे या तो विक्षिप्त, अस्थायी सुख की खोज में उलजा हुआ जीवन बना सकते हैं, या फिर इसे शान्त, बुद्धिमान और जिज्ञासु बना सकते हैं– ऐसा साधन जो सतही सत्य पर न रुककर, अन्तिम सत्य की खोज करें। ऐसा सत्य जो मन की कल्पना या उससे निर्मित नहीं है, किन्तु जो शाश्वत, और अपरिवर्तनीय है। असत्य के निषेध द्वारा ही हम उस सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं – यह यात्रा मन के माध्यम से होती है।

अतः आश्चर्य नहीं कि गीता मन को क्षेत्र कहती है, एक उर्वर भूमि, जिसमें जो हम बोते हैं, वही हम काटते हैं।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – २४

पुत्रवित्तादयो भावा
यस्य शेषतया प्रियाः।
द्रष्टा सर्व प्रियतमः
सोऽहमित्यवधारय॥

पुत्र, धन आदि पदार्थ जिसके लिए प्रिय है, यह द्रष्टा सब से ज्यादा प्रिय है, ऐसा निश्चय करों।

वाक्य वृत्ति

पूर्व श्लोकों में आचार्य ने हमें अपनी चैतन्यस्वरूपता के बारे में श्रुति, युक्ति और अनुभूति प्रमाण से बताया। अब इस श्लोक से आचार्य बताना आरम्भ करते हैं कि आत्मा मात्र चैतन्यस्वरूप ही नहीं किन्तु आनन्दस्वरूप भी है। यद्यपि आत्मा की आनन्दस्वरूपता का आज हमें अनुभव नहीं हो रहा है। ऐसा लगता है कि हम आनन्द से रहित है, और हमारा आनन्द बाहर ही किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति पर निर्भर है। हमारी आज की अनुभूति भले ही विपरीत हो, किन्तु अपनी आनन्दस्वरूपता के लिए शास्त्र प्रमाण है। इस बात को युक्ति से भी समझ सकते हैं।

सृष्टि में हम अनेकों वस्तु एवं व्यक्ति से प्रेम करते है। ये सब विषय हमारे प्रेम के आस्पद बने हुए है। जब हम किसीको कहते हैं कि हम तुम्हें सर्वाधिक प्रेम करते है, तो हमें उस पर गहराई से विचार करके देखना चाहिए कि 'हम क्यों प्रेम करते हैं?' वस्तुतः

वह वस्तु अथवा व्यक्ति हमारे अनुकुल है, हमें सुख दे रहा है या हमारे अहं की संतुष्टि करता है। वह वस्तु या व्यक्ति कब तक हमें प्रिय रहता है? जब तक हमारे अनुकुल है, सुख प्रदान करने में सक्षम होता है, उसके माध्यम से हमारा अहं संतुष्ट होता है। आचार्य यहां बता रहे हैं कि पुत्रवित्तादयो भावाः यस्य शेषतया प्रियाः। पुत्र, मित्र, धन-सम्पत्ति, पति-पत्नी आदि सम्बन्ध प्रिय लगते हैं। किसे प्रिय लगते हैं? हमें, हमारे लिए। अर्थात् महत्वपूर्ण यह सब वस्तु, व्यक्ति आदि नहीं है किन्तु 'हम' महत्वपूर्ण है। ये सब चीजें हमें सशर्त प्रिय है।

जगत में यह भी देखते हैं कि पति-पत्नी के सम्बन्धों का आरम्भ प्रेम से हुआ प्रतीत होता है, जहां अन्योन्य अनुकुल होकर अन्योन्य सुख प्रदान करते है। किन्तु कई प्रसंग देखते है कि कुछ ही समय पश्चात् सम्बन्ध में दरार उत्पन्न होकर सम्बन्ध विच्छेद कर दिया जाता है। इसका कारण स्पष्ट है कि, अब वे हमारे लिए, 'मैं' के अनुकुल नहीं रहे। यह दर्शाता है कि हमारा सर्वाधिक प्रेम

'मैं' अर्थात् जो इन सबका अनुभव करनेवाला 'द्रष्टा' है, उसके प्रति है। अन्य स्थान पर प्रेम का आभास मात्र है।

इसी बात को याज्ञवल्क्य ऋषि अपनी प्रिय पत्नी को बताते हैं कि, 'मैत्रेयी! कोई पत्नी पति को पति के लिए नहीं, किन्तु अपने सुख के लिए प्रेम करती है।' इसी प्रकार कोई पति पत्नी को..। यही बात समस्त सम्बन्धों में लागू होती है। वास्तव में, कोई भी किसीको किसीके लिए नहीं किन्तु अपने सुख के लिए ही प्रेम करते है।

अतः आचार्य बता रहे हैं कि द्रष्टा सर्वप्रियतमः सो–अहं इति अवधारय।' यह आत्मप्रेम सहज, जन्मजात है, किसी समय विशेष में उत्पन्न नहीं होता। इतना ही नहीं, यह केवल मनुष्यों में ही नहीं किन्तु समस्त पशु, पक्षी, पेड़, पौधे आदि जीवों में भी होता है। यह सार्वाभौमिक और बगैर किसी प्रयोजन व शर्त के होता है। प्रेम उसके प्रति होता है, जो आनन्द देता है। और हमारा अपने प्रति प्रियतमत्व इसी बात का प्रमाण है कि सर्वाधिक आनन्द 'मैं' से ही होता है। स्वयं में स्वयं को कुछ देना वा लेना नहीं होता है। अतः आत्मा ही आनन्दस्वरूप है, यह बात सिद्ध होती है। एवं अपने सर्वाधिक प्रिय होने का तुम निश्चय करों।

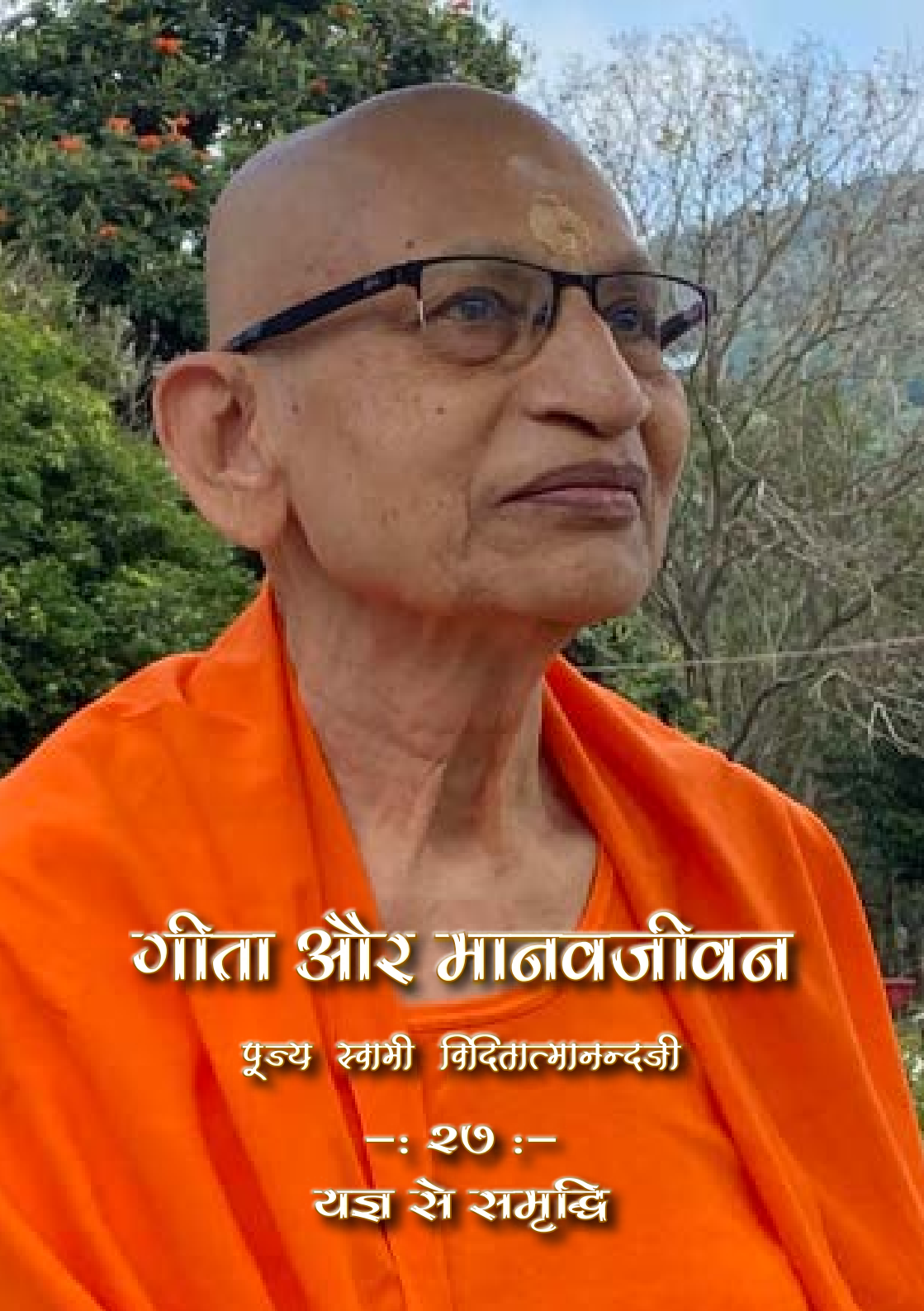

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: २७ :–

यज्ञ से समृद्धि

गीता और मानवजीवन

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यः यज्ञः कर्मसमुद्रभवः।।

प्राणियों का जन्म अन्न में से होता है। अन्न वृष्टि से उत्पन्न होता है। वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ कर्म से होता है।

प्राणियों का जन्म होता है अन्न में से। हमारी उत्पत्ति अन्न में से हुई है। हमारा पोषण भी अन्न से ही होता है। अन्न अपने आपका समर्पण करता है तब प्राणियों को पोषण मिलता है और जीवन सम्भव होता है। और अन्ततः अन्न में ही लीन हो जाते है। अन्न सतत अपने देह में अपना समर्पण करता है। अन्न समर्पण करना बन्ध कर दे तो हमारा देह टिक ही नहीं सकता।

पर्जन्याद् अन्नसम्भवः - अन्न का सृजन होता है वृष्टि से। वर्षा ने भी अपने आपका

सम्पूर्ण समर्पण कर दिया। वर्षा जब रस के रूप में परिणत हुई, तब उसमें से अन्न का सृजन हुआ। इसी का नाम है समर्पण।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यः– वर्षा यज्ञ से उत्पन्न होती है। यज्ञसे, समर्पण की भावना से कर्म किए जाने पर एक सूक्ष्म प्रकार का प्रभाव उत्पन्न होता है, जो वर्षा को खिंच कर लाता है। क्या तुम यह मान रहे हो कि, यह वृक्ष वर्षा को खिंच लाते है? यह वैज्ञानिक दृष्टि से हो सकता है। किन्तु वास्तव में वर्षा को कौन खिंचकर लाता है? जिस समाज में अनेको लोग समर्पण की, यज्ञ की भावना से, निःस्वार्थ भावना से कर्म करते है, वहां इस प्रकार का सूक्ष्म प्रभाव उत्पन्न होता है जो वर्षा को लेकर आता है। हमें जो समृद्धि प्राप्त होती है, वह वर्षा का अथवा ईश्वर का अनुग्रह है। हम यज्ञदृष्टि से कर्म करते है तब योग और क्षेम का वहन करने की जिम्मेदारी ईश्वर की हो जाती है।

यज्ञः कर्मसमुद्भवः – यज्ञ अर्थात् समर्पण की भावना को कब बनाए रख सकते हैं? जब हम धर्म के अनुरूप कर्म करते है। अहिंसा, सत्य इत्यादि मूल्यों के आधार से हम कर्म करते है तो स्वतः समर्पण हो जाता है। समर्पण के लिए कुछ

अलग करने की आवश्यकता नहीं है। अहिंसा का पालन करना हो तो हिंसा द्वारा मुझे जो कुछ प्राप्त करना हो उसका समर्पण करना ही पडेगा।

हिंसा तो आज के समय में स्वाभाविक धर्म हो गया है। किसी की भावना को आहत करना, किसी का मजाक उड़ाना, किसीके बल पर आनन्द अनुभव करना, किसीका छिन लेना, यह सब स्वाभाविक हो गया है। मच्छर मेरे शरीर पर बैठ़ा हो तो उसे मार देने में कैसा आनन्द आता है! खटमल मुझे काटे तो उसे चुन-चुनकर केरोसिन में डूबो देना! यह सब हीनवृत्तियों पर, अपने आवेगों पर, क्रोध पर विजय प्राप्त करना पडता है और उसका त्याग करना पडता है। सत्य का पालन करना हो तो असत्य का और असत्य बोलने से हो रहे भौतिक लाभ का भी त्याग करना पड़ता है।

इस प्रकार, जीवन के जो मूलभूत मूल्य है, उन मूल्यों का पालन करने में त्याग और समर्पण अपने आप ही हो जाता है।

जीवनमुक्त

– ६१ –

बदरीनाथ

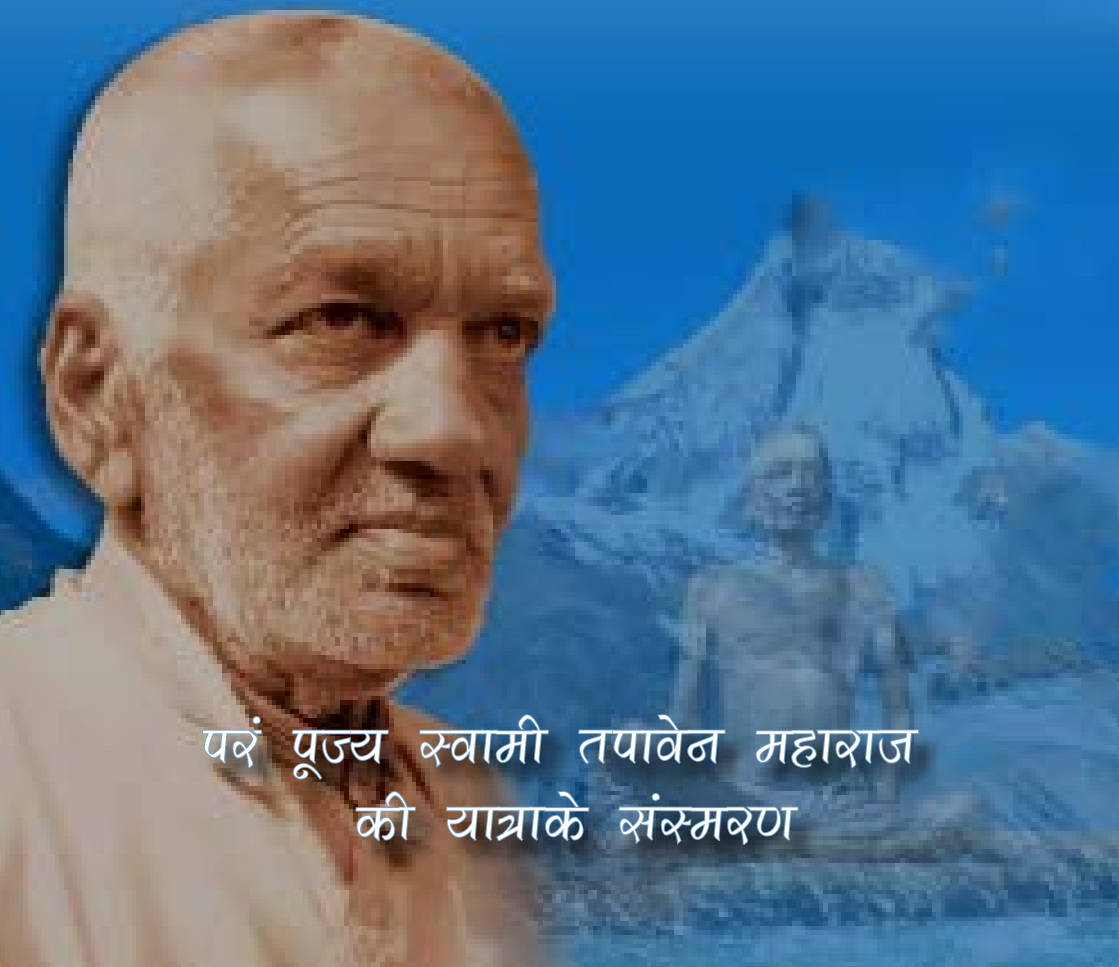

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

महाभाग, वीरव्रत, धर्ममूर्ति युधिष्ठिर आगे ही आगे कदम बढ़ाते हुए जिस पुण्य देश से इन्द्र सारथी मातलि द्वारा स्वर्ग की ओर ले जाये गये, वह 'स्वर्गारोहिणी' नामक प्रसिद्ध दिव्य भूमि बदरीनाथ से पंद्रह-सोलह मील पर स्थित है। मैं जब बदरीनाथ में था, तब आषाढ मास में मैंने उस मार्ग से यात्रा की थी। यहां के प्राकृतिक सौंदर्य की सुषमा ही नही, पौराणिक महापुरुषों के प्रति श्रद्धा भक्ति भी मुझे ऐसे दुर्लभ प्रदेशों का दर्शन करने की प्रेरणा देती थी।

जिस पर्वत की पूर्वी तराई में बदरीपुरी विराजमान है, उसी पर्वत की पश्चिमी तराई से उपर की ओर चढ़ते जाने पर 'नारायण पर्वत' नामक स्थान पर पहुंच जाते है। बदरीश मंदिर से अलकनंदा के किनारे-किनारे, विशालता में फैले हुए मैदान से होकर करीब तीन मील तक सीधे उत्तर की ओर यात्रा करें

तो वहां 'माना' नामक एक ग्राम आ जाता है। यद्यपि अब यह ग्राम कुछ अशिक्षित कृषकों और व्यापारियों का निवासस्थान है, तथापि यहां ऐसे चिह्न भी मिल जाते हैं, जिनसे यह अनुमान होता है कि पूर्वकाल में यह प्रदेश ऋषि मंडलियों से मंडित होगा। केशवावतार बदरीनारायण महर्षि जिस स्थान पर विराजमान थे वह व्यास गुहा, महाभारत आदि ग्रंथों की रचना के लिए उन्होंने गणेश का आह्वाहन करके जहां पूजा की थी, वह गणेश गुहा तथा श्रीकृष्ण के आदेशानुसार मुचुकुन्द राजा अन्ततः जहां रहते थे, वह मुचुकुन्द गुहा तथा अन्य कई रमणीय गुफाएं इस गांव के पास आज भी विद्यमान है। वैशाख से कार्तिक तक के महीनों मे कई साधु महात्मा इन्हीं गुफाओं में आकर तपोवृत्ति में रहा करते है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कौशल्या चरित्र

– १३ –

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

मां कौशल्या श्रीराम के वनगमन पर उनके विरह में कभी किसी पथिक को आदरपूर्वक बुलावा भेजतीं और उससे कहतीं– 'प्रिय पथिक! यदि वन में मेरे राघव से भेंट हो जाए तो उन तक मेरा यह संदेश पहुंचा देना, कहना– राघव! केवल एक बार के लिए ही सही, अयोध्या लौट आवें। मैं जानती हूं कि यह वाक्य सुनते ही वे चौक पड़ेंगे और सम्भवतः तुम से कहेंगे कि जिस धैयमयी मां ने 'तौ कानन सत अवध समाना' कहकर वन जाने का आदेश और आशीर्वाद प्रदान किया हो वह इस प्रकार की भीरुता की वाणी कैसे कह सकती हैं! तब तुम उससे कहना कि मां ने स्वयं अपने लिए सन्देश नहीं भेजा है। तुम्हारे वियोग में घोड़ों की जो दशा हुई उसे देखकर धैर्य धारण करने की उनकी सारी शक्ति समाप्त हो चुकी है। मैं उन्हें कर्तव्य-पथ से विचलित नहीं करना चाहती।

वह केवल एक बार आकर अपने घोड़ों को देख जाएं, उसके पश्चात् मैं स्वयं उन्हें लौटने से नहीं रोकुंगी।

तेरह वर्ष की लम्बी प्रतीक्षा के पश्चात् जब सचमुच एक दूत दूरगामी पुत्र को सन्देश पहुंचाने के लिए प्राप्त हुआ तो ऐसा लगा कि मां की भावनाओं का ज्वार उमड़ पड़ेगा। न जाने कितने मनुहार और प्यार भरे स्वर में सन्देश भेजने की व्यग्रता उनकी वाणी में मचल पड़ेगी किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। ऐसा लगा कि जैसे मां के वात्सल्य का स्रोत सूख गया हो। कभी वन जाते समय व्याकुलता भरे स्वर में उनकी वाणी से यह बोल निकल पड़े थे कि 'वह मंगलमय दिन और घड़ी कब होगी जब मैं तुम्हें देखकर विह्वल स्वर में पुकार उठूंगी। वत्स और लाल कहकर तुम्हें हृदय से लगा लूंगी। पर आज के सन्देश में शब्दों की कृपणता देखने योग्य है। सम्बोधन के लिए वत्स, लाल तो दूर, राघव कहकर भी उन्हें नहीं पुकारा गया। हां, सन्देश में लक्ष्मण के नाम के साथ यह शब्द जरुर जुड़े हुए थे पर राघवेन्द्र के लिए सम्बोधनों का सर्वथा अभाव है।

वस्तुतः यह सन्देश 'अरथ अमित अरु

आखर थोरे' का ही प्रतीक है। सन्देश का अभिप्राय इतना ही था कि, 'भेंट कर उनसे कहना कि तुम्हारी कठोर हृदयवाली मां ने यह सन्देश भेजा है कि तुम्हारा नाम लाल लोने लक्ष्मण के साथ ही अच्छा लगता है।' स्वयं को कठोर हृदयवाली मां कहकर आत्मनिन्दा मात्र ही नहीं की गई है अपितु इसमें राघवेन्द्र के प्रति एक आक्षेप है कि बिना कठोर हृदयवाला हुए कोई व्यक्ति इस प्रकार भातृ बलिदान के निष्ठुर कार्य का द्रष्टा नहीं बन सकता है। यदि तुम्हारे लिये यह सम्भव हुआ तो इसका एक मात्र यही कारण हो सकता है कि तुम्हारा जन्म एक कठोर हृदयवाली मां के गर्भ से हुआ है। यदि मैं पुत्र-वियोग का दुःख सहकर भी जीवित हूं तो लगता है उसीका अनुगमन करते हुए तुम भी भ्रातृवियोग को सह पा रहे हो। मां का यह कथन और भी मार्मिक था कि तुम्हारा नाम लक्ष्मण के साथ ही अच्छा लगता है। इसका तात्पर्य यह था कि यदि तुम लक्ष्मण रहित लौटे तो न केवल वर्तमान काल में अपितु भविष्य के लिए भी तुम्हारा नाम कलंकित हो जाएगा। जब तक तुम लक्ष्मणरहित हो तब तक तुम्हारा नाम मुझे स्वीकार्य नहीं है।

कथा / प्रसंग

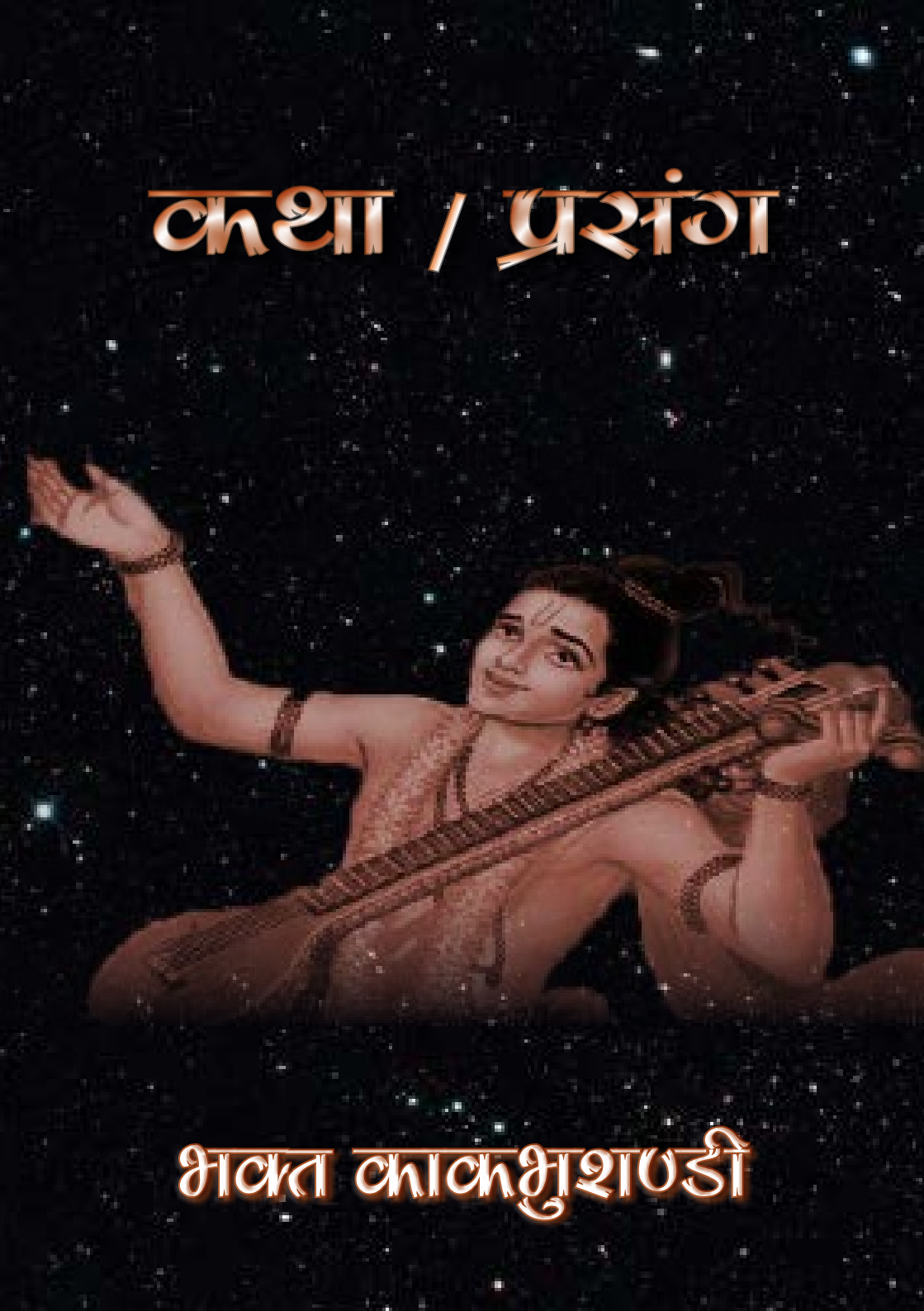

भक्त काकभुशण्डी

भक्त काकभुशण्डी

एक बार काकभुशण्डी ने अपने गुरु को सम्मान देने से इन्कार कर दिया, जब कि उनके गुरु एक मन्दिर में भगवान शिव की प्रार्थना में लीन थे। उस अनादर से भगवान शिव ने क्रुद्ध होकर अपने कृतघ्न भक्त को श्राप दिया कि वह सर्प योनि में जन्म ले और सहस्त्र जन्मों तक तुच्छ प्राणी के रूप में जीवन बिताएं। जब उनके गुरु ने शिवजी से प्रार्थना की कि इस श्राप को कुछ कम किया जाए, तब शिवजी ने कहा कि इन सहस्त्र जन्मों के पश्चात् काकभुशण्डी श्रीराम के भक्त बनेंगे। साथ ही शिवजी ने चेतावनी दी कि वे फिर कभी किसी गुरु को अप्रसन्न न करें।

जैसा कहा गया था, शापित जन्मों के बाद काकभुशण्डी का जन्म एक ब्राह्मण

कुल में हुआ और वे श्रीराम के महान भक्त एवं तपस्वी बने। एक बार, वे लोमश ऋषि से निर्गुण ब्रह्म की उपासना की महिमा पर प्रवचन सुन रहे थे, परन्तु उन्होंने इस दृष्टिकोण को स्वीकार करने से मना कर दिया। इस प्रर क्रोधित होकर लोमश ऋषि ने उन्हें कौआ बनने का शाप दे दिया।

काकभुशण्डी ने गरुड को बताया कि प्रत्येक त्रेतायुग में वे अयोध्या जाते हैं और पांच वर्षों तक नगर में रहते हैं, जहां वे कौए के रूप में श्रीराम के बालरूप का दर्शन करते हैं। एक बार श्रीराम ने कौए के पीछे भागते हुए उसे पकडने का प्रयास किया। तभी काकभुशण्डी के मन में श्रीराम की दिव्यता पर क्षणभर के लिए संशय उत्पन्न हुआ। जब काकभुशण्डी आकाश की और उड चले, तो उन्होंने देखा कि भगवान की उंगलियां सदैव उनसे दस अंगुलि भर दूर ही है। चाहे वे ब्रह्मलोक तक ही क्यों न पहुंच जाएं! जब उन्होंने अपनी आंखें खोली तो स्वयं को फिर से अयोध्या में हंसते हुए बालक श्रीराम के समीप पाया।

भक्त काकभुशण्डी

उन्होंने श्रीराम के मुख में एक दिव्य दर्शन देखा, जिसमें असंख्य सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान थे और हर एक ग्रह-नक्षत्र में उन्होंने स्वयं को अयोध्या में बैठे हुए देखा। वे इन सभी लोकों में शताब्दियों तक निवास करते रहे और अन्त में श्रीराम के मुख से बाहर आकर फिर उसी क्षण में लौट आएं जहां से गए थे। यह अद्भुत लीला देखकर उन्होंने श्रीराम से मोक्ष की याचना की और उन्हें तुरन्त उसका वरदान प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने आराध्य द्वारा प्रदत्त इसी कौआ रूप को सदा बनाए रखने का निश्चय किया, क्योंकि यही रूप उन्हें प्रिय था।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

Online Vedanta Classes

आश्रम / मिशन समाचार

Bal Sanskar Shivir

@ Ashram, Indore

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Recognized with a Certificate

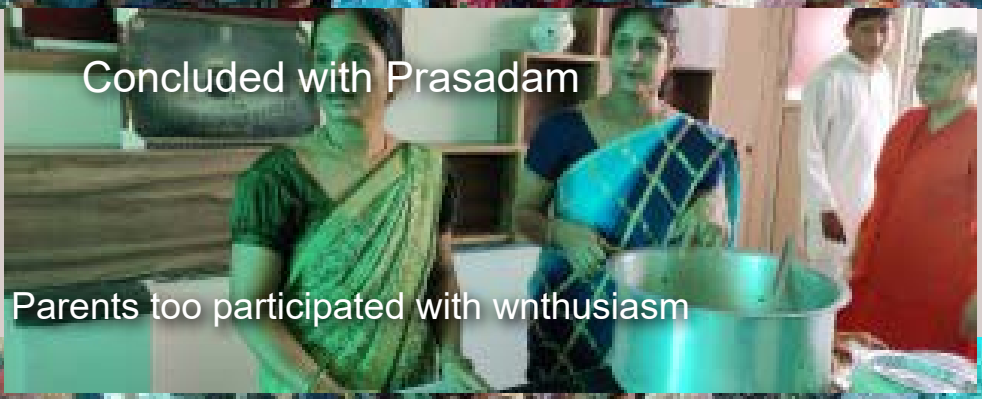

Concluded with Prasadam

Parents too participated with wnthusiasm

Happy & Satisfied

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Blessed by the presence of Lord Shiva

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

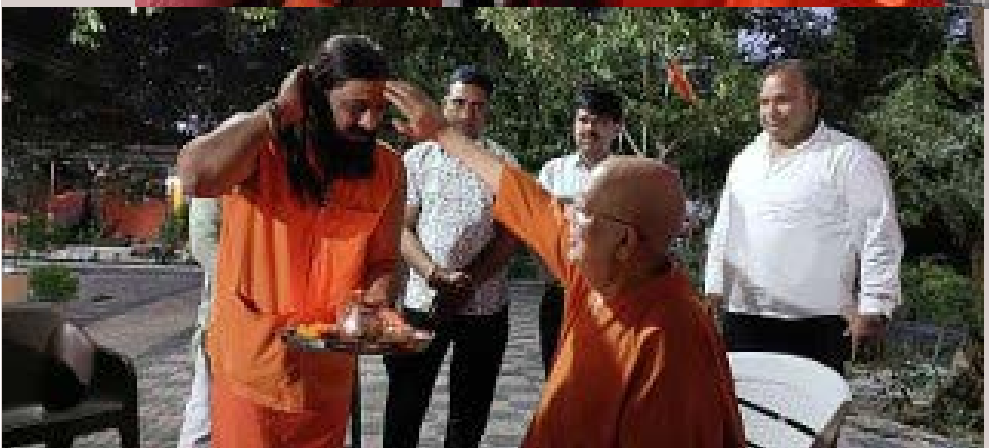

आश्रम / मिशन समाचार

Karmayog se Karmotkarsha

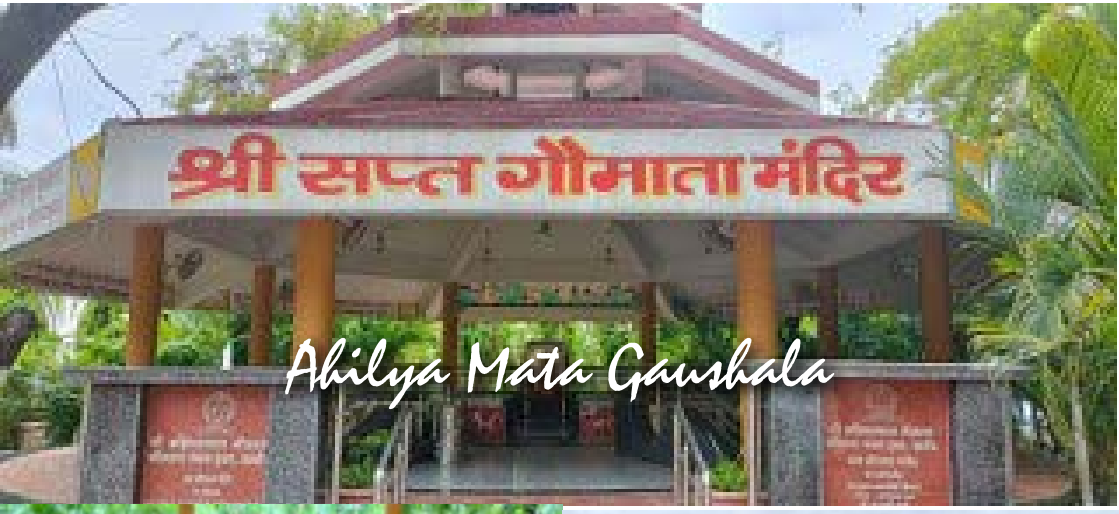

Ahilya Mata Gaushala

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

आदि शंकराचार्य विरचित तत्त्वबोध

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

INTERNET NEWS

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

Video Pravachans on Internet Archive Channel

(Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh ~ Juiy '25

Vedanta Piyush ~ June '25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore